विवाह से पहले रिश्तों पर नज़र

विवाह से पहले जासूसी का ट्रेंड भारत में तेज़ी से बढ़ता जा रहा है. मज़े की बात यह है कि न सिर्फ़ लड़केवाले लड़कियों की और लड़कीवाले लड़के की जासूसी करवाते हैं, बल्कि वे एक-दूसरे के परिवारों की भी जासूसी करवाने लगे हैं. विश्वास-अविश्वास की उधेड़बुन में समाज व विवाह के बदलते परिवेश और मायने अब अलग स्वरूप में हमारे सामने आ रहे हैं. लोग अब शादी से पहले यह तसल्ली कर लेना चाहते हैं कि जिनसे रिश्ता वो जोड़ने जा रहे हैं, वो विश्वास योग्य हैं भी या नहीं. यही वजह है कि प्री मैट्रिमोनियल इन्वेस्टिगेशन का चलन अब तेज़ी से हमारे समाज में बढ़ भी रहा है और लोगों को लुभा भी रहा है.

क्या-क्या जानना चाहते हैं लोग?

- लड़केवाले यह जानना चाहते हैं कि लड़की का कहीं अफेयर तो नहीं चल रहा.
- वो घर का काम-काज ठीक से करती है या नहीं. ज़्यादा गुस्सेवाली तो नहीं.
- स्पेंडिंग हैबिट्स कैसी है यानी ज़्यादा शॉपिंग तो नहीं करती.
- ऑनलाइन चैटिंग हिस्ट्री, सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर उसके स्टेटस अपडेट्स, फोटोज़ आदि कैसे हैं.
- पार्टीज़ किन दोस्तों के साथ करती है. सिगरेट-शराब भी पीती है क्या आदि?
- इसी तरह से लड़कीवाले लड़के की सैलरी और ऑफिस में उसकी रेप्यूटेशन के बारे में जानना चाहते हैं.
- उसके अफेयर्स व गर्लफ्रेंड्स, कैरेक्टर आदि की जानकारी.
- उसके दोस्त किस तरह के हैं? सिगरेट, शराब की लत तो नहीं.
- कितना ओपनमाइंडेड है?
- लोन वगैरह या ज़मीन-जायदाद से संबंधित कोई केस तो नहीं?
- करियर को लेकर कितना सीरियस है?
- लड़का कहीं ममाज़ बॉय तो नहीं.
- अपनी मां की हर बात सुनता है या ख़ुद अपने निर्णय भी लेता है.
- लड़का अपनी सैलरी किस तरह से ख़र्च करता है? क्या पूरी सैलरी मां के हाथों में देता है?
- होनेवाला पति अपनी मां के कितने कंट्रोल में रहता है?
- लड़के की बहन व भाई का स्वभाव कैसा है?

कहानी में ट्विस्ट है?

कहानी में ट्विस्ट यह है कि होनेवाली बहू अपनी सास की और होनेवाली सास अपनी बहू की भी अलग से जासूसी करवाती हैं. यह सुनने में कुछ अलग और रोचक भी लग रहा है, लेकिन शादी को लेकर लोगों की बढ़ती सतर्कता और जागरूकता की ओर भी इशारा करता है.

बहू क्या-क्या जासूसी करवाती है?

- होनेवाली सास का स्वभाव कैसा है? कहीं बहुत अधिक गुस्सेवाली या अंधविश्वासी तो नहीं?
- पूरे घर पर क्या उसी का राज चलता है?
- उनकी सोच कितनी मॉडर्न है?
- क्या वो शॉपिंग करना पसंद करती हैं?
- घर का कामकाज ख़ुद करती हैं या किसी और से करवाती हैं?
- लड़की उसके कितने कंट्रोल में रहेगी?
- कहीं ज़्यादा बोलनेवाली तो नहीं?
- बहुत ज़्यादा खुले विचारों की तो नहीं?
- कहीं ज़्यादा ख़र्चीली तो नहीं?
- घर का काम कितना कर सकेगी?
- कहीं अधिक करियर ओरिएंटेड तो नहीं?

एक्सपर्ट ओपिनियन

प्री मैट्रिमोनियल का ट्रेंड भारत में इतनी तेज़ी से क्यों बढ़ रहा है? आख़िर इसके फ़ायदे क्या हैं और क्या कुछ नुक़सान भी हो सकते हैं? इस तरह के तमाम सवालों के जवाब जानने के लिए हमने बात की भारत की सबसे बड़ी इन्वेस्टिगेटिव एजेंसी, स्लूत्स इंडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर **श्री नमन जैन से.**

"अगर हम १० वर्ष पहले की बात करें, तो मुश्किल से हर महीने १० केसेस हमारे पास आते थे, लेकिन प्री मैट्रिमोनियल इन्वेस्टिगेशन का ट्रेंड इतनी तेज़ी से बढ़ा कि आज की तारीख़ में हर महीने २०० केसेस हमारे पास आते हैं.

- इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि समय के साथ-साथ टेक्नोलॉजी हमारी लाइफस्टाइल का इतना अभिन्न हिस्सा बन गई है कि अब शादियां व रिश्ते भी मैट्रिमोनियल साइट्स, ऑनलाइन या सोशल नेटवर्किंग साइट्स के ज़रिए अधिक होने लगी हैं. ऐसे में यह ख़तरा भी बना रहता है कि कहीं धोखा न हो जाए या शातिर इंसान से रिश्ता न जुड़ जाए.
- बीते वक़्त में रिश्ते जोड़ने का काम रिश्तेदार या दोस्त वग़ैरह ही करते थे, लेकिन अब ऐसा नहीं रह गया है. दूसरी तरफ़ यदि आज की तारीख़ में भी यदि रिश्ता जान-पहचानवालों के ज़रिए भी होता है, तब भी पूरी तरह से छानबीन करना ज़रूरी है, क्योंकि लोगों में जागरूकता बढ़ी है. वो अलर्ट हो गए हैं. जिस तेज़ी के साथ तलाक़ के मामले बढ़ रहे हैं, ऐसे में शादी जैसा महत्वपूर्ण फ़ैसला आंख मूंदकर नहीं

लिया जा सकता.

- शिक्षा का स्तर बढ़ने के साथ-साथ लोगों में जागरूकता आई है, ऐसे में शादी ज़िंदगी का बहुत बड़ा फ़ैसला होता है और हर किसी की कोशिश यही रहती है कि उसे सही लाइफपार्टनर मिले, ताकि उसका यह रिश्ता ताउम्र टिका रहे.
- हमारे जैसी एजेंसीज़ उनकी मदद प्रोफेशनल तरीक़े से कर सकती हैं, क्योंकि कोई लड़का या लड़की कैसी है, उनका कैरेक्टर, उनकी लाइफस्टाइल आदि बातें शायद उनके पैरेंट्स भी इतनी अच्छी तरह से नहीं जान पाते, जितना हम पता कर सकते हैं.
- अगर किसी दोस्त या रिश्तेदार की मदद सकोई रिश्ता हो रहा है, तो वो मात्र ऊपरी तौर पर ही यह बता सकता है कि परिवार कैसा है यानी सब कुछ सिर्फ़ अनुमान पर निर्भर करता है. ऐसे में शादी एक रिस्क या ट्रायल-एरर मेथड बन जाती है, लेकिन आज की जनरेशन शत-प्रतिशत आश्वस्त होना चाहती है, अपने इस फ़ैसले को लेकर.
- इन मामलों में सिर्फ़ एक्सपर्ट्स ही उनकी मदद कर सकते हैं. यही वजह है कि प्री मैट्रिमोनियल इन्वेस्टिगेशन तेज़ी से बढ़ रहा है. जहां तक भारत का सवाल है, तो हमने इसकी शुरुआत की और पिछले १७ वर्षों से हम मार्केट में हैं. हमारा अनुभव यही कहता है कि यह ट्रेंड और भी बढ़ेगा, क्योंकि इसके सिर्फ़ फ़ायदे ही फ़ायदे हैं, नुक़सान ज़ीरो परसेंट है यानी कोई नुक़सान नहीं.
- हम पर लोगों का भरोसा बढ़ रहा है, क्योंकि वो भी जानते हैं कि यह काम आसान नहीं, इसमें कई चुनौतियां होती हैं, जिनका सामना सिर्फ़ एक्सपर्ट्स ही कर सकते हैं.
- लड़के व लड़कियां दोनों ही तरफ़ से समान रूप से इन्वेस्टिगेशन के केसेस आते हैं. सामान्यतः कैरेक्टर, अफेयर्स, फाइनेंशियल स्टेटस, पास्ट हिस्ट्री (जैसे- कोई सगाई या शादी टूटी हो), मेडिकल कंडिशन, सायकोलॉजिकल डिसऑर्डर, क्रिमिनल बैकग्राउंड, एजुकेशन, करियर, कोई बुरी लत आदि की जानकारी ली जाती है. लेकिन कभी-कमार लोग एक स्टेप आगे बढ़कर एचआईवी या गोत्र आदि की जानकारी की भी डिमांड करते हैं. अब एचआईवी का मामला तो ऐसा है कि शायद जो स्वयं इससे इंफेक्टेड होते हैं, वो भी तब तक नहीं जान पाते, जब तक कि अंजाने में उनके सामने यह खुलासा नहीं हो जाता है.
- सिर्फ़ लड़का-लड़की ही एक-दूसरे के बारे में नहीं, दोनों परिवार के लोग भी एक-दूसरे के बारे में जानने की इच्छा रखते हैं. होनेवाले सास-ससुर का स्वभाव, लोन या लेन-देन से जुड़े मामले, कोर्ट-कचहरी व आर्थिक स्थिति आदि बातें इसमें शामिल होती हैं.
- कुल मिलाकर यही कह सकते हैं कि शादी उम्रभर का साथ होता है और टेक्नोलॉजी के युग में इससे जुड़े रिस्क भी बढ़ रहे हैं, ऐसे में परफेक्ट लाइफपार्टनर ढूंढ़ना आसान नहीं, लेकिन प्री मैट्रिमोनियल इन्वेस्टिगेशन काफ़ी हद तक इसमें लोगों की मदद कर सकती है."

– ब्रह्मानंद शर्मा